Utilitarian Theory (उपादेयतावाद सिद्धांत)

In English:
The Utilitarian Theory is a moral and legal philosophy which says that an action is right if it produces the greatest happiness for the greatest number of people. It focuses on the results or consequences of actions rather than the motive behind them. The theory was mainly developed by **Jeremy Bentham** and later refined by **John Stuart Mill**. According to this view, laws should be made in such a way that they maximize overall welfare and minimize pain or suffering in society.

In Hindi (उपादेयतावाद सिद्धांत):
उपादेयतावाद सिद्धांत एक नैतिक और विधिक दर्शन है, जिसके अनुसार कोई भी कार्य तभी सही माना जाता है जब वह अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम सुख या कल्याण उत्पन्न करे। यह सिद्धांत कार्य के परिणामों पर ध्यान देता है, न कि उसके पीछे की भावना या उद्देश्य पर।
इस सिद्धांत को मुख्य रूप से **जेरेमी बेंथम (Jeremy Bentham)** ने विकसित किया और बाद में **जॉन स्टुअर्ट मिल (John Stuart Mill)** ने इसका विस्तार किया।
इस सिद्धांत के अनुसार, **कानूनों को ऐसा होना चाहिए जो समाज में अधिकतम सुख और न्यूनतम दुःख पैदा करें।**

संक्षेप में:
👉 "अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख" का सिद्धांत ही उपादेयतावाद है।

Question:

Explain the Utilitarian Theory. (20 Marks)
उपादेयतावाद सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

English Answer:

Introduction:
The Utilitarian Theory is one of the most influential theories in jurisprudence and ethics. It is based on the principle that the rightness or wrongness of an act depends on its consequences. This theory was mainly developed by **Jeremy Bentham** and later refined by **John Stuart Mill**. It is also known as the "Greatest Happiness Principle."

Meaning:
The term "Utilitarianism" is derived from the word *utility*, which means usefulness. According to this theory, an action is morally and legally right if it tends to promote happiness, and wrong if it tends to produce pain or unhappiness.
Bentham defined utility as "that property in any object, whereby it tends to produce benefit, advantage, pleasure, good or happiness."

Main Principles of Utilitarian Theory:

1. **Greatest Happiness Principle:**
   Law should aim to provide the greatest happiness for the greatest number of people.

2. **Consequentialism:**
   The morality of an action is judged by its outcome or result, not by the intention behind it.
3. **Pleasure and Pain Calculation:**
   Bentham introduced the concept of the *Hedonic Calculus*, which measures pleasure and pain through factors like intensity, duration, certainty, and extent.
4. **Social Welfare Objective:**
   The main goal of law is to promote public welfare and prevent harm.

Jeremy Bentham's View:
Bentham's utilitarianism is **quantitative**, meaning he believed happiness can be measured in terms of quantity — more happiness equals more utility.
He advocated that all laws should aim to maximize pleasure and minimize pain. For him, "Nature has placed mankind under the governance of two sovereign masters — pain and pleasure."

John Stuart Mill's View:
John Stuart Mill developed **qualitative utilitarianism**. He emphasized that the *quality* of happiness is more important than the *quantity*.
According to him, intellectual and moral pleasures are superior to mere physical pleasures. Mill said, "It is better to be a human being dissatisfied than a pig satisfied."

Criticism:

1. It ignores individual rights in favor of the majority's happiness.
2. It is difficult to measure happiness and pain accurately.
3. Sometimes it may justify immoral acts if they result in general happiness.

Relevance in Modern Law:
Despite criticism, utilitarianism remains the foundation of many legal and social reforms. Modern welfare laws, punishment theories, and economic policies often aim to maximize collective welfare — a reflection of utilitarian thinking.

Conclusion:
The Utilitarian Theory connects law with social welfare. It teaches that the ultimate purpose of law is not only justice but also happiness and welfare for all. In simple words, any law or action is justified if it ensures "the greatest happiness of the greatest number."

Hindi Answer:

भूमिका:
उपादेयतावाद सिद्धांत (Utilitarian Theory) न्यायशास्त्र और नैतिक दर्शन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

यह इस विचार पर आधारित है कि किसी कार्य की अच्छाई या बुराई उसके परिणामों पर निर्भर करती है। इस सिद्धांत को मुख्य रूप से **जेरेमी बेंथम (Jeremy Bentham)** ने प्रस्तुत किया और **जॉन स्टुअर्ट मिल (John Stuart Mill)** ने इसे और विकसित किया। इसे "अधिकतम सुख के सिद्धांत" के नाम से भी जाना जाता है।

अर्थ:

"Utilitarian" शब्द *Utility* से निकला है, जिसका अर्थ है उपयोगिता या लाभ। इस सिद्धांत के अनुसार, कोई भी कार्य तभी नैतिक या कानूनी रूप से सही है जब वह अधिकतम लोगों के लिए सुख या लाभ लाए, और गलत है जब वह पीड़ा या हानि उत्पन्न करे।
बेंथम के अनुसार – "Utility means that property in any object, whereby it tends to produce benefit, advantage, pleasure, good or happiness."

उपादेयतावाद के मुख्य सिद्धांत:

1. **अधिकतम सुख का सिद्धांत (Greatest Happiness Principle):**
   कानून का उद्देश्य अधिकतम लोगों को अधिकतम सुख देना होना चाहिए।
2. **परिणामवाद (Consequentialism):**
   किसी कार्य की नैतिकता उसके परिणामों से तय होती है, न कि उसके उद्देश्य से।
3. **सुख और दुःख की गणना (Hedonic Calculus):**
   बेंथम ने सुख और दुःख को मापने के लिए तीव्रता, अवधि, निश्चितता और व्यापकता जैसे मापदंड दिए।
4. **सामाजिक कल्याण का उद्देश्य:**
   कानून का उद्देश्य समाज के समग्र कल्याण को बढ़ावा देना और हानि को रोकना है।

जेरेमी बेंथम का दृष्टिकोण:

बेंथम का उपादेयतावाद **मात्रात्मक (Quantitative)** था। उनका मानना था कि सुख को मात्रा में मापा जा सकता है — जितना अधिक सुख, उतनी अधिक उपयोगिता।
उनके अनुसार, "प्रकृति ने मनुष्य को दो स्वामी दिए हैं – सुख और दुःख; और यही उसके कार्यों के मार्गदर्शक हैं।"

जॉन स्टुअर्ट मिल का दृष्टिकोण:

मिल का उपादेयतावाद **गुणात्मक (Qualitative)** था। उन्होंने कहा कि सुख की गुणवत्ता उसकी मात्रा से अधिक महत्वपूर्ण है।
उनका प्रसिद्ध कथन है — "Better to be a human being dissatisfied than a pig satisfied." अर्थात् "असंतुष्ट मनुष्य होना संतुष्ट पशु होने से बेहतर है।"

आलोचनाएँ:

1. यह सिद्धांत बहुसंख्यक के सुख के लिए अल्पसंख्यक के अधिकारों की उपेक्षा करता है।
2. सुख और दुःख का सटीक मापन संभव नहीं है।

3. कभी-कभी यह सिद्धांत नैतिक रूप से गलत कार्यों को भी उचित ठहरा सकता है यदि उससे समाज का सुख बढ़े।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता:
आज भी उपादेयतावाद का प्रभाव कानून और नीति-निर्माण में देखा जा सकता है। कल्याणकारी राज्य, दंड सिद्धांत और सामाजिक सुधार की नीतियाँ इस सिद्धांत की भावना को प्रतिबिंबित करती हैं।

निष्कर्ष:
उपादेयतावाद सिद्धांत कानून को समाज के कल्याण से जोड़ता है। इसका उद्देश्य केवल न्याय नहीं, बल्कि अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम सुख सुनिश्चित करना है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि —
"जहाँ अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख है, वहीं सच्चा न्याय है।"